वनस्पतियों से बने जूते तथा एक्सेसरीज़ अक्सर कम मंहगी होती हैं - चमड़े से ६० से ७५ प्रतिशत तक सस्ती !

जूते, बैग,बेल्ट, जैकेट, स्नीकर... ड्रेसी या कैजुअल इन सबके क्रूरता रहित विकल्प पाये जा सकते हैं. बस, आपको पता होना चाहिए कि ये कहां मिलेंगे.

आप क्या कर सकते हैं :

- कभी चमड़ा मत खरीदिए, ऐसे जूते तथा एक्सेसरीज आप आसानी से पा सकते हैं जिनमें शान हो और पशुओं की पीड़ा का नामोनिशान न हो. ये रिनाल्डी डिजाइन्स जैसे डिजाइनर और आलीशान स्टोरों और कई रीटेल चेन्स में आसानी से मिल सकते हैं जैसे कि मेट्रो और बाटा. अनेक बड़ी दुकानों तथा फुटपाथ की दुकानों पर भी कॉटन, लिनेन, रेमी, कैनवास तथा सिंथेटिक्स जैसी सामग्रियों से बने तरह-तरह के चमड़े रहित जूते-चप्पल एवं एक्सेसरीज मिलते हैं, तथा वनस्पति जूते व एक्सेसरीज अक्सर कम मंहगे होते हैं - चमड़े से ६० से ७५ प्रतिशत तक सस्ते !

- चमड़े पर अधिक जानकारी के लिए पीटा से सम्पर्क करें या www.PETAIndia.com पर विजिट करें.

7/02

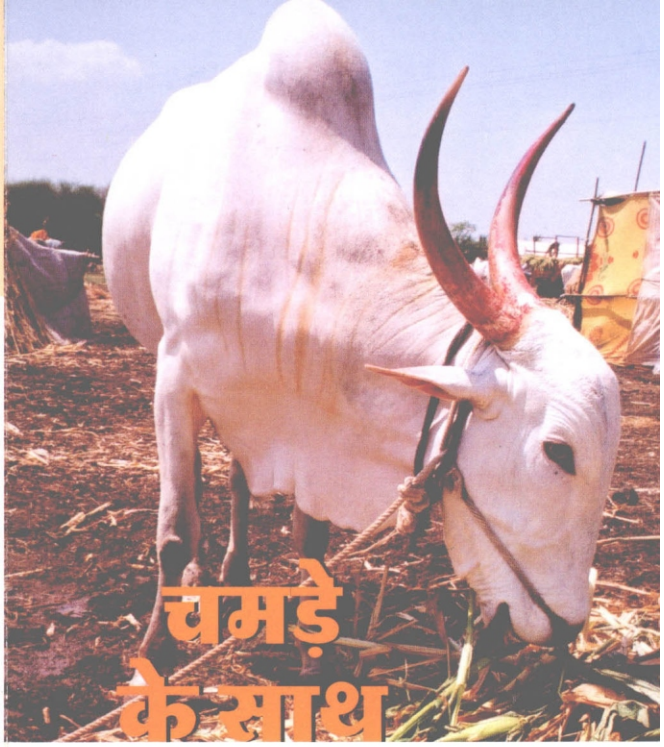

चमड़े के साथ क्या है गलत बात ?

भारत में चमड़े को इंडियन काउन्सिल ऑफ एग्रिकल्चरल रिसर्च द्व मांस उद्योग के 'सह-उत्पाद' की संज्ञा दी है, जबकि वास्तविक यह है कि यह निर्यात के रूप में मांस की अपेक्षा अधिक मूल्य पाता है. चमड़े की खरीद पशुओं के परिवहन में क्रूरता तथा कसाईखानों में उनके साथ दर्दनाक व्यवहार को खुला समर्थन देती है. जब डेयरी की दुधारू गायें दूध देना बंद कर देत हैं तो उनकी खालों का इस्तेमाल चमड़े के रूप में किया जाता है. उनके बछड़ों को भी अक्सर जहर दे दिया जाता है या भूखा-प्यासा रखा जाता है ताकि उनके चम की ऊंची कीमत वसूल हो सके.

तकरीबन सभी पशु जिनको अंततः बेल्ट या जूतों का रूप लेने को मज़बूर होना पड़ता है, परिवहन तथा कसाईखानों में अत्यन्त क्रूर व्यवहार झेलना पड़ता है. उन्हें तंग जगहों में बेरहमी से ठूंस कर भर दिया जाता है तथा कइयों को एनेस्थिया दिए बगैर बधिया किया जाता है, पूंछ तथा सींग काट दिए जाते हैं.

पीटा
पीपल फॉर द एथिकल ट्रीटमेंट ऑफ एनिमल्स
पो.ऑ. बॉक्स २८२६०, जुहू, मुंबई ४०० ०४९ • ०२२ २६२८१८८०
www.PETAIndia.com

पीटा

दुनियाभर में हर सेकेण्ड ७० से अधिक गायों, भैसों, सुअरों, भेड़ों तथा अन्य पशुओं को मौत के घाट उतार दिया जाता है.

चमड़े की खातिर गायों के सींग तोड़ दिए जाते हैं, उन्हें मारा-पीटा जाता है तथा भूखा-प्यासा रखा जाता है.

आपके जूतों में कौन है ?

ज्यादातर चमड़ा, गाय, भैंस, भेड़, बकरी आदि की खाल से बनाया जाता है, मगर घोड़े, सुअर, मगरमच्छ, सांप और अन्य जानवर भी चमड़े के स्रोत हैं. इनके अलावा एशिया के कुछ हिस्सों में चमड़े की खातिर कुत्तों और बिल्लियों को भी मारा जाता है. चमड़ा खरीदते वक्त आप यह नहीं पता लगा सकते कि यह कहां से आया है या किस पशु का है. कुत्ते की खाल के चमड़े पर 'कुत्ता' लेबल नहीं लगा होता है. और उदाहरण के लिए यह भी संभव है कि भारतीय चमड़े से इटली में वस्त्र बनाए जाएं और फिर आप उन पर लेबल लगा पाएं 'मेड इन इटली'. असलियत क्या है यह आप कभी नहीं जान सकते.

चमड़े से बनी चीजें खरीदते समय आप एशियाई कुत्ते व बिल्ली चर्मशालाओं का चमड़ा खरीद सकते हैं, क्योंकि उत्पादों पर आमतौर पर कोई लेबल नहीं लगे होते हैं और असलियत जानने का कोई तरीका नहीं है.

© M. Karremann/Animal Network

चमड़े के लिए इस्तेमाल किए जानेवाले, कई पशु इतने बीमार और जख्मी होते हैं कि जब तक वे कसाईखानों में पहुंचते हैं उन्हें घसीटकर अंदर ले जाना पड़ता है. कइयों को चलाने के लिए उनकी आंखों में मिर्च और तम्बाखू झौंक दी जाती है तथा उनकी पूंछों को दर्दनाक तरीके से मरोड़कर तोड़ दिया जाता है, उनकी हड्डियों के जोड़ों को चटकाया जाता है और उन्हें चलते रहने को तब तक मजबूर किया जाता है जब तक कि वे बेदम होकर गिर नहीं पड़ते. कसाईखानों में पहुंचने पर जीते जी ही टांगों से उल्टा लटकाकर उनकी गर्दन काट दी जाती है तथा खाल उतारना शुरू कर दिया जाता है.

चर्मशाला विष

चमड़े को सड़ने से बचाने के लिए उन पर कई तरह के केमिकल्स लगाए जाते हैं. उनमें से कई काफी जहरीले होते हैं जैसे कि क्रोम. चर्मशालाओं में काम करनेवालों तथा उनके नज़दीक रहनेवालों में कई तरह की समस्याएं पायी जाती हैं, जैसे कि मासिकस्राव संबंधी गड़बड़ी, मृतशिशु को जन्म देना, गर्भाशय का बाहर लटकना, कैन्सर, घबराहट, दमा, अन्य बीमारियां तथा असमय मृत्यु. अमेरिका स्थित दि नेशनल इंस्टिट्यूट फॉर ऑक्यूपेशनल सेफ्टी एंड हेल्थ ने गौर किया है कि अमेरिका में चर्मशालाओं में दुर्घटना तथा मृत्यु की दर - जहां कि भारत की चर्मशालाओं से कहीं अधिक नियंत्रण है - दूसरे सभी उद्योगों के औसत से पांच गुना अधिक है.

'बंगलोर और कोलकाता में नगरपालिका के कसाईखानों में कर्मचारी और छोटे बच्चों द्वारा भी जानवरों को बेरहमी से धकेल कर और घसीटते हुए कत्ल करने की जगह पर पहुंचाते देखा गया. जहां उनको बिखरे खून और अन्य जानवरों के शरीर से निकाली गयी अंतड़ियों के ढेर पर पटक दिया गया. ये जानवर भय से कांप रहे थे, उनकी आंखें फैल गई थी, उनसे आंसुओं का झरना बह रहा था और वे लाचार होकर अपने साथियों को मरते देख रहे थे तथा अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे. कर्मचारियों के पास मौजूद चाकू धारहीन थे तथा जानवरों के अक्सर होश में रहते ही वे उनके पैरों को काट देते थे.

– पीटा इंवेस्टीगेटर